इफको (IFFCO) के प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत किसानों का आफरी भ्रमण दिनांक 3/2/2016

इफको (IFFCO) द्वारा दिनांक 1 से 4 फरवरी, 2016 तक किसानों के लिए आयोजित किये गये प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम के तहत डा. श्री राम जाखड़, उप क्षेत्र प्रबन्धक (Dy. Field Manager), इफको (IFFCO) जोधपुर के नेतृत्व में पाली, जोधपुर, जालोर, बाड़मेर एवं नागोर जिले के 30 किसानों ने दिनांक 3 फरवरी, 2016 को शुष्क वन अनुसंधान संस्थान ,जोधपुर का भ्रमण किया । संस्थान के निदेशक श्री एन.के.वासु, भा.व.से. ने किसानों का संस्थान में स्वागत करते हुए उन्हें बताया कि संस्थान वानिकी से संबंधित अनुसंधान कार्य करता है । श्री वासु ने पश्चिमी राजस्थान की पारिस्थितिकी परिस्थितियों का जिक्र करते हुए कहा कि कम से कम भूमि में अधिक से अधिक पैदावार कैसे लें, जिससे किसानों की आय भी बढ़े, इस ओर कार्य किया जाना चाहिए । श्री वासु ने बताया कि किसानों के जमीनी ज्ञान एवं अनुभव तथा वैज्ञानिक पद्धतियों को मिलाकर कृषि वानिकी के तहत राजस्थान में खेजड़ी (Prosopis cineraria), रोहिड़ा(Tacomalla undulata), कुमट(Acacia senegal) जैसी स्थानीय प्रजातियों को पनपाकर आय भी बढ़ायी जा सकती है तथा मिट्टी जैसी पारिस्थितिकी घटकों में भी सुधार हो सकता है । श्री वासु ने भूमि के उचित उपयोग करने का आह्वान करते हुए खाद्य सुरक्षा की भी आवश्यकता जतायी । श्री वासु ने खेजड़ी के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु इसे

कायिक वर्धन तथा बीज से उगाकर पनपाने का भी आह्वान किया । श्री वासु ने नीम के तेल तथा उससे प्राप्त होने वाले अजाडिरेक्टिन (Azadiracthin) तथा गुगल पर हो रहे अनुसंधान की भी चर्चा करते हुए कुमट और गुगल जैसी प्रजातियों के पौधारोपण का भी आह्वान किया । श्री वासु ने किसानों से समितिया बनाकर गोंद जैसे उत्पादों का वैज्ञानिक विधि से प्रमाणीकरण कराने का आग्रह किया ताकि इससे अधिक आय अर्जित की जा सके ।

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने शुष्क वन अनुसंधान संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों का विस्तृत विवरण पावर पॉइन्ट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा कृषि वानिकी के तहत वृक्ष पनपाने एवं चारागाह विकास मॉडल इत्यादि की जानकारी दी ।

वैज्ञानिक डॉ तरूण कान्त ने जिनेटिक इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) पर प्रकाश डाला ।

इसके बाद किसानों को विभिन्न प्रयोगशालाओं का श्री चौधरी ने भ्रमण करवाया । प्रयोगशाला भ्रमण के दौरान किसानों ने गेनोडरमा(Genoderma) जैसी वृक्षों में लगने वाली बीमारियों, ऊतक संवर्धन (Tissue Culture), मिट्टी एवं जल परीक्षण, काष्ठ उपचार इत्यादि अनुसंधान गतिविधियों का अवलोकन किया तथा जानकारी प्राप्त की । किसानों के इस दल ने आफरी परिसर में स्थित ऊतक संवर्धन पद्धति से विकसित गुगल पौधरोपण का भी अवलोकन किया ।

इसके बाद किसानों ने संस्थान के निर्वचन एवं विस्तार केन्द्र का भ्रमण किया जहाँ श्री चौधरी ने अवक्रमित पहाड़ियों का पुनर्वासन(Restoration of degraded hills), टिब्बा स्थिरीकरण(Sand dune estbilization) , जल प्लावित भूमि का पुनर्वासन(Rastoration of water logged areas), राजस्थान के विभिन्न प्रकार के वन, नमक प्रभावित भूमि का पुनर्वासन, कृषि वानिकी इत्यादि विषयों से संबंधित अनुसंधान गतिविधियों एवं सूचनाओं की जानकारी के साथ साथ विभिन्न वनोत्पाद एवं मिट्टियों की जानकारी दी । श्री चौधरी ने किसानों को वनों की महत्ता एवं पर्यावरण संरक्षण के बारे में भी बताया ।

किसानों के इस दल ने संस्थान की प्रायौगिक पौधशाला का भी भ्रमण कर उच्च तकनीक पौधशाला तथा औषधीय पौधों के जर्म प्लाज्म बैंक का अवलोकन किया । वैज्ञानिक श्री पी. एच.चव्हाण ने किसानों से बीजों के उपचार एवं कंपोस्ट की चर्चा की । पौधशाला प्रभारी श्री सादुल राम देवड़ा, अनुसंधान सहायक -द्वितीय ने पौधशाला तकनीक की

जानकारी दी । भ्रमण कार्यक्रम में श्रीमती मीता सिंह तोमर, तकनीकी सहायक का सहयोग रहा।